॥ लक्ष्मीकवचम् ॥

लक्ष्मी कवचम् एक अत्यंत प्रभावी कवच है । इस कवच का नित्य पाठ करने से भगवती महालक्ष्मी निश्चित ही दरिद्रता दूर करती हैं । यहां हमने इस कवच को हिन्दी मेएं अनुवाद सहित दिया है, जिससे कि आप इस फलदायी स्तोत्र के भावार्थ को समझ पाएं ।

ईश्वर उवाच

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामद्म ।
यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत्साक्षात्सदाशिवः ॥

ईश्वर बोले कि हे देवी! अब सर्वकामनापूरक लक्ष्मी कवच का वर्णन सुनो, जिसके जानने से शिवसायुज्य की प्राप्ति होती है ।

नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः ।
स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रेषु पारगः ॥

हे देवी! उसका जाप करने मात्र से ही जापक पार्वती पुत्र के समान और सर्वशास्त्र में पारंगत हो जाता है ।

विद्यार्थिना सदा सेव्या विशेषे विष्णुवल्लभा ॥

जो विद्या की अभिलाषा करता है, उसे यत्नपूर्वक विष्णुप्रिया लक्ष्मीजी की आराधना करनी
चाहिए ।

विनियोगः

अस्याश्चतुरक्षरिविष्णुवनितारूपायाः कवचस्य श्री भगवान शिव ऋषिरनुष्टुप्च्छन्दोवाग्भवी देवता वाग्भवं बीजं, लज्जाशक्ती, रमा कीलकं कामबीजात्मकं कवचं मम सुपाण्डित्यकवित्वसर्वसिद्धिसमृद्धये जपे विनियोगः ॥

इस चतुरक्षरी विष्णुवनिता कवच के ऋषि भगवान शिव, अनुष्टप् छन्द, देवता वाग्भवी, ऐं बीज, लज्जा शक्ति, रमा कीलक है । इस कवच का कामबीजात्मक, सुपाण्डित्य, कवित्व और सर्वसिद्धिसमृद्धि के निमित्त विनियोग किया जाता है ।

ऐंकारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्वसिद्धिदा ।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शांकरी ॥

ऐंकारी हमारे मस्तक की रक्षा करे, संपूर्ण सिद्धि देने वाली वाग्भवी ही हमारे दोनों नेत्रों के मध्य की और शांकरी हमारे दोनों नेत्रों की रक्षा करे ।

जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्गण्डयोर्नसि,

ओष्ठाधरे दन्तपंक्तौ तालुमूले हनौ पुनः ।
पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी ॥
वर्णरूपिणी लक्ष्मी हमारी जिह्वा, मुखमंडल, कानों, नासिका, ओष्ठ, अधर, दंतपंक्ति, तालुमूल (तालुआ) और ठोड़ी की रक्षा करे ।
कर्णयुग्मे भुजद्वंद्वे स्तनद्वंद्वे च पार्वती,
हृदये मणिबंधे च ग्रीवायां पार्श्वयोः पुनः ।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समन्नति ॥
पार्वती नामक लक्ष्मी हमारे कानों की, भुजाओं, स्तनों, हृदय, मणिबंध, गरदन और पार्श्व की रक्षा करे ।कामेशी महादेवी और समुन्नति हमारे संपूर्ण अंगों की रक्षा करे ।
व्युष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टि सर्वदावतु ।
सन्धि पातु सदा देवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा ॥
व्युष्टि, महामाया और उत्कृष्टि सदा हमारी रक्षा करे ।देवी शंभु वल्लभा सर्वत्र सदा हमारे संधि की रक्षा करे ।
वाग्मवी सर्वदा पातु पातु मां हरिगेहिनी ।
रमा पातु सदा देवी पातु माया स्वराट् स्वयम् ॥
सरस्वती, हरिगेहिनी, रमा व माया सदा हमारी रक्षा करे ।
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी ।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ॥
विष्णुमाया लक्ष्मी हमारे संपूर्ण अंगों की रक्षा करे, विजया हमारे घर में सदा रक्षा करे और जया
हमारी रक्षा करे ।
शिवदूती सदा पातु सुंदरी पातु सर्वदा ।
भैरवी पातु सर्वत्र भैरूण्डा सर्वदाऽवतु ॥
शिवदूती, सुंदरी, भैरवी और भैरूण्डा सभी स्थानों में सदा हमारी रक्षा करे ।
त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु ॥
पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु ॥
त्वरिता, उग्रतारा, कालिका और कालरात्रि प्रतिदिन सदा हमारी रक्षा करे ।
नवदुर्गा सदा पातु कामाख्या सर्वदावतु ।
योगिन्यः सर्व्वदा पातु मुद्राः पातु सदा मम ॥
नवदुर्गा, कामाख्या और योगिनीगण व मुद्रासमूह सदा हमारी रक्षा करे ।
मातरः पातु देव्यश्च चक्रस्था योगिनीगणाः ।
सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्म्मसु सर्वदा ॥

पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा ॥
मातृदेवीगण, चक्र की योगिनीगण और संपूर्ण समृद्धि देने वाली देवी लक्ष्मी सदा हमारी रक्षा करे ।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये ।
यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥
मैंने तुम्हें सर्वसिद्धिदाता इस अत्युत्तम दिव्य लक्ष्मी कवच को सुनाया ।जो इससे लाभ उठाना चाहते हैं, उन्हें यह हर किसी को नहीं बताना चाहिए ।
शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरि ।
न्यूनांगे अतिरिक्तांगे दर्शयेन्न कदाचन ॥
हे महेश्वरी! जो प्राणी भक्तिविहीन तथा निंदक है, जो स्थूल अंग वाला हो, उसके निकट प्राणांत का अवसर आनेपर भी यह कवच उजागर नहीं करना चाहिए ।
न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं संदर्श्य शिवहा भवेत्,
कुलीनाय महोच्छ्राय दुर्गाभक्तिपराय च
वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात्कवचमुत्तमम् ॥
दुरात्मा प्राणी के निकट कभी इस स्तोत्र को प्रकट न करें, जो प्रकट करता है, वह शिवहत्या का दोषी होता है ।जो प्राणी कुलीन, दुर्गाभक्त, विष्णु भक्त और विशुद्धचित है, उसको ही यह अत्युत्तम दिव्य कवच कहना चाहिए ।
निज शिष्याय शान्ताय धनिने ज्ञानिने तथा ।
दद्यात्कवचमित्युक्तं सर्वतन्त्रसमन्वितम् ॥
भक्त, ज्ञानी को ही यह कवच प्रदान किया जाना चाहिए ।
विलिख्त कवचं दिव्यं स्वयम्भुकुसुमैः शुभैः ।
स्वशुक्रैः परशुक्रैश्च नानागन्धसमन्वितैः ॥
गोरोचनाकंउकुमेन रक्तचन्दनकेन वा ।
सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने ॥
अश्विन्यांकृत्तिकायांवाफल्गुन्यांवामघासु च ।
पूर्वभाद्रपदायोगे स्वात्यां मंगलवासरे ॥
विलिखेत्प्रपठेत्स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये ।
आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः ॥
इंद्रयोगे शुभयोगे शुक्रयोगे तथैव च ।
कौलवे बालवे चैव वणिजे चैव सत्तमः ॥
शुभतिथि, शुभयोग में, श्रवण में, रविवार को अश्विनी, कृत्तिका, फाल्गुनी, मघा, पूर्वभाद्रपद, स्वाति नक्षत्र में, मंगलवार को, विशेषकर ब्रह्मयोग में, इंद्रयोग में, शुभयोग में, कौलव,

बालव और वाणिजकरण योग में स्वयम्भू, कुसुम, गोरोचन, कुंकुम, लाल चंदन अथवा अत्युत्तम गन्ध द्रव्य से इस दिव्य कवच को लिखकर इसकी पूजा करने से दीर्घायु और श्रीवृद्धि होती है ।

शून्यागारे श्मशाने वा विजने च विशेषतः ।
कुमारीं पूजयित्वादौ यजेद्देवीं सनातनीम् ॥

सूने घर, श्मशान अथवा एकांत स्थान में कुमारी पूजा करके, फिर सनातनी देवी लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए ।

बहुना किपिहोक्तेन कृते त्वेवं दिनत्रयम् ।
तदाधरेन्महारक्षां शंकरेणाभिभाषितम् ॥

अधिक और क्या कहा जाए । जो कोई तीन दिन इस प्रकार लक्ष्मी की आराधना करता है, वह किसी भी प्रकार की विपत्ति में नहीं प्णअड़ता तथा वह संपूर्ण आपदाओं से सुरक्षित रहता है । शंकर द्वारा कथित यह वाक्य कभी विफल होने वाला नहीं है ।

मारणद्वेषणादीनि लभते नात्र संशयः ।
स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रविशारदः ॥

जो प्राणी भक्ति सहित लक्ष्मी की पूजा करके इस दिव्य कवच का पाठ करता है, उसे काम्यकर्म प्रभावित नहीं करते तथा वह विद्वान होता है ।

गुरूर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य हरप्रिया ।
अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥

जो प्राणी एकांतचित्त हो लक्ष्मीदेवी की आराधना करता है वह साक्षात शिव की सायुज्यमुक्ति को प्राप्त करता है, उसकी स्त्री हरप्रिया के समान होती है और सिद्धि शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है ।

सर्वदेवमयीं देवीं सर्वमन्त्रमयीं तथा ।
सुभक्त्या पूजयेद्यस्तु स भवेत्कमलाप्रियाः ॥

जो प्राणी भक्ति सहित सर्वदेवमयी और सर्वमन्त्रमयी लक्ष्मी का पूजन करता है, उस पर देवी की कृपा होती है ।

रक्तपुष्पैस्तथा गन्ध्वर्वस्त्रालंकरणैस्तथा ।
भक्त्या यः पूजयेद्देवीं लभते परमां गतिम् ॥

जो कोई लाल फूल, लाल चंदन, वस्त्र और अलंकारादि से लक्ष्मी का पूजन करता है, वह अन्तकाल में मोक्ष पाता है ।

नारी वा पुरूषो वापि यः पठेत्कवचं शुभम् ।
मन्त्रसिद्धिः कार्यसिद्धिर्लभते नात्र संशयः ॥

जो स्त्री-पुरूष इस कवच का पाठ करते हैं, निःसंदेह मंत्र सिद्धि और कार्य-सिद्धि प्राप्त करते हैं ।

पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ।

जपफलमनुमेयं लप्स्यते यद्विधेयम् ॥
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्रः ।
क्षितिपमुकुटलक्ष्मीर्लक्षणानां चिराय ॥
जो कोई नित्य इस लक्ष्मी कवच का पाठ करता है, वह
उच्चतरोत्तर उन्नति करता है ।
॥ इति लक्ष्मीकवचं संपूर्णम् ॥

Visit http://www.webdunia.com for additional texts with Hindi meanings.

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated November 22, 2001